विशिष्ट बालकों की शिक्षा
TEACHING OF EXCEPTIONAL CHILDREN

आज यह विश्वास किया जाता है कि हमारे शैक्षिक स्तर (Educational standards) निरन्तर गिरते जा रहे हैं। किसी सीमा तक इसे सही कहा जा सकता है क्योंकि यह देखने में आया है कि प्रत्येक कक्षा में छात्र उतनी सफलता का प्रदर्शन नहीं कर पाता है जितनी कि उससे आशा की जाती है। किसी सीमा तक इसका दोषी अध्यापक को ठहराया जा सकता है। अध्यापक ने इस तथ्य को जाने के बहुत कम प्रयास किये हैं कि वास्तव में विद्यार्थियों की समस्यायें क्या हैं? वास्तव में, वे सफल निदान (Diagnosis) करने में असमर्थ रहे हैं।

हमें आश्चर्य होता है कि छात्र अपने मूल प्रत्ययों (Fundamentals) पर निपुणता (Mastery) क्यों नहीं प्राप्त कर पाते हैं? इसके कारण अनेक हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थियों की विज्ञान सम्बन्धी समस्याओं का उचित ढंग से निदान किया जाये, उसके पश्चात् उनके निराकरण हेतु सफल उपचारात्मक शिक्षण (Remedial teaching) की व्यवस्था की जाये। निदान करते समय विद्यार्थी की शारीरिक दशा, उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ (Auditory and Visual) दूसरे विषयों में उसकी उपलब्धि, उसका सामान्य बौद्धिक स्तर या योग्यता, उसकी घेरलू परिस्थितियाँ, कार्य करने का ढंग (Work habits) तथा गलती करने के कुछ विशेष कारण (Specific error pattern) आदि का पता लगाया जाये। ऐसा करने से छात्र की अयोग्यता के कारणों का किसी हद तक पता लगाया जा सकता है।

अपने विषय का शिक्षण करते समय अध्यपाक के सामनेअनके प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। कक्षा के एक विशाल समूह में विद्यार्थी अपनी वैयक्तिक विभिन्ताओं (Individual Differences) के अनुरूप विषय को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं। अधिकाँशतः विद्यार्थी औसत दर्जे (Medium) के होते हैं जिनको ध्यान में रखते हुए ही अध्यापक अपने शिक्षण की योजना बनाता है लेकिन कभी-कभी उसके सामने विषम परिस्थिति उस समय उत्पन्न होती है जब प्रतिभाशाली छात्र उसके शिक्षण को निम्न स्तर का समझते हुए उसका एवं उसके द्वारा प्रस्तुत विषय सामग्री (Material) दोनों की ही उपेक्षा करता है, जबकि दूसरी ओर यही शिक्षण सामग्री पिछड़े विद्यार्थी के लिये समझ से परे प्रतीत होती है। ऐसी स्थिति में ऐसे शिक्षण की व्यवस्था करना जो सन्तुलन में हो अर्थात, प्रतिभाशाली एवं पिछड़े दोनों वर्गों के विद्यार्थीयों को समान रूप आकर्षित करे, असम्भव नहीं तो दूभर अवश्य ही है। एक ही समय पर दोनों वर्गों को सन्तुष्ट कर पाना शिक्षक की शिक्षण कला (Art of Teaching) पर निर्भर करता है।

विशिष्ट बालक का अर्थ
(Meaning of Exceptional Child)

"A child is classified as exceptional, abnormal, atypical or deviating if his ability or behaviour differs markedly from that which is considered to be standard for his group."

Scanned with CamScanner

हम उस बालक को विशिष्ट अथवा असामान्य बालक मानते हैं जो अपनी योग्यता अथवा व्यवहार की दृष्टि से अपने आयु समूह के बालकों के लिये निर्धारित मानक से भिन्न होता है। दूसरे शब्दों में असामान्यता बालक की उस स्थिति का द्योतक है जिसमें कोई अजनबी भी यह सहज अनुभव कर ले कि उस बालक का व्यवहार समूह के दूसरे सदस्यों से भिन्न है।

(Exceptional or atypical refers to a condition of an individual that even the casual observer appears to act apart from other members of the group.)

विद्यालय के दृष्टिकोण से हम उस बालक को विशिष्ट बालक कहेंगे जो शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक एवं सामाजिक दृष्टि से अपने आयु समूह के बालकों से इस सीमा तक भिन्न व्यवहार करता है कि वह सामान्य पढ़ाई से कोई लाभ नहीं उठा पाता है तथा जिसको विशिष्ट अवस्था के बावजूद भी दूसरे सामान्य व्यक्तियों की तरह रचनात्मक जीवन बिताने के लिये विद्यालय को अलग से विशिष्ट शैक्षणिक सुविधायें उपलब्ध करानी पड़ती हों।

पिछड़े बालकों की विशेषतायें

(Characteristics of the Mentally Retarded Children)

1. पिछड़े बालकों की बुद्धिलब्धि (I.Q.) 75 से 90 के बीच या इससे कम होती है।
2. इस वर्ग के बालकों की शिक्षा के लिये विशेष कक्षायें (Special classes) लगाने की आवश्यकता पड़ती है।
3. इन बालकों का ध्यान एवं रुचि थोड़े समय तक ही बना रहता है।
4. ये बालक अधिक समय तक अपनी एकाग्रता को कायम नहीं रख सकते।
5. ये बालक शैक्षणिक (Academic) तथा सामाजिक कार्य-कलापों में भाग लेने के लिये अक्षम आपक को समर्थ नहीं मानते।
6. किसी भी समस्या में उलझ कर रह जाते हैं।
7. किसी समस्या पर सूक्ष्म रूप में (Abstractly) विचार नहीं कर सकते।
8. ये बालक स्वतन्त्र रूप से (Independently) कार्य करना अच्छा समझते हैं।
9. ये बालक निर्देशों (Directions) का खुशी से पालन करते हैं।
10. इनमें साधारण सी बातों या नियमों को समझने की भी क्षमता नहीं होती।
11. ये बालक असामाजिक एवं अपराध क्रियाओं में लिप्त रहते हैं।
12. ये बालक वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाते।
13. उपेक्षित महसूस करने पर हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं।
14. अपनी आलोचना सहन नहीं कर पाते।
15. ये अन्तुर्मुखी (Introvert) होते हैं तथा इनके मित्रों की संख्या सीमित होती है।
16. इनकी तर्क एवं विवेक शक्ति निम्न स्तर की होती है।
17. समाज तथा स्वयं के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण नहीं अपनाते।
18. ये शीघ्र निर्णय नहीं ले पाते हैं।
19. दूरदर्शिता की कमी (Lack of farsightedness) होती है।

Scanned with CamScanner